3

तुर्क–अफगान शासक

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) के अवसर पर जुबैदा भारत के प्रधानमंत्री को दिल्ली स्थित लालकिला पर झंडा फहराते हुये टेलीविजन पर देख रही थी। अचानक उसके मन में यह प्रश्न उठा कि दिल्ली भारत की राजधानी कब बनी ?

आज से लगभग 950 वर्ष पहले तोमर राजपूत वंश के राजाओं के शासनकाल में दिल्ली नगर का विकास एक व्यापार व वाणिज्य केन्द्र के रूप में हुआ। इस नगर में कई धनी व्यापारी रहते थे। यहाँ 'दिल्लीवाल' नाम का सिक्का ढाला जाता था। 12वीं शताब्दी के मध्य में अजमेर के चौहान शासकों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। चौहान राजाओं ने अजमेर के साथ साथ दिल्ली को भी अपने प्रशासन का केन्द्र बनाया।

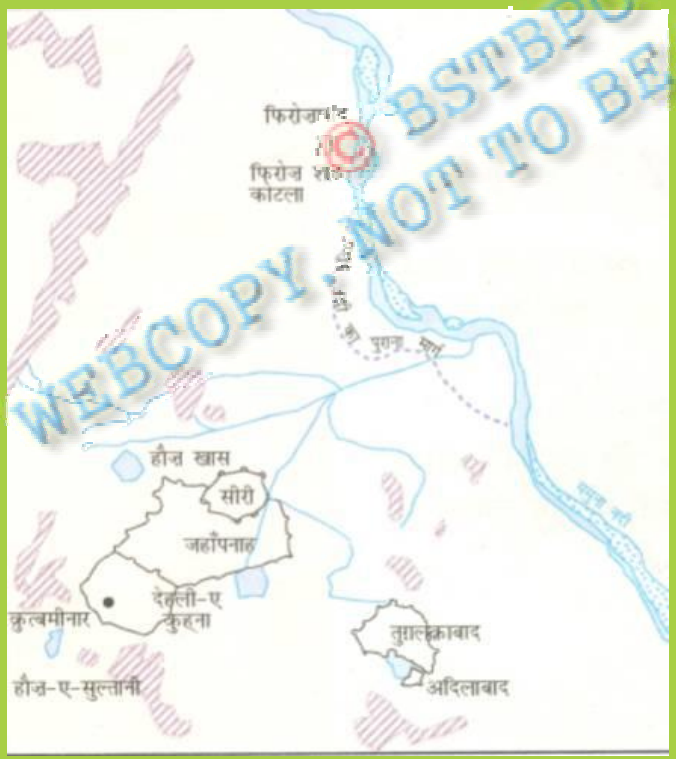

मानचित्र 1 दिल्ली का मानचित्र

13वीं शताब्दी के आरंभ में तुर्कों ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना की इसके साथ ही दिल्ली भारतीय उपमहाद्वीप के प्रशासन

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

www.absol.in

का केन्द्र बन गया। लगभग 300 वर्षों से अधिक तक पाँच राजवंशों के सुल्तानों ने दिल्ली सल्तनत पर शासन किया। तालिका 1 में इन पाँच राजवंशों की सूची दी गई है दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों में अनेक बस्तियाँ बसायीं, जिसे आज हम दिल्ली के अभिन्न अंग के रूप में जानते हैं।

मानचित्र 1 को देखकर दिल्ली में बसाए गए शहरों की सूची बनायें।

दिल्ली के सुल्तानः एक नजर

तालिका–1

1.प्रारंभिक तुर्क शासक (1206 से 1290 ई॰)

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 से 1210 ई॰)

इल्तुतमिश (1210 से 1236 ई॰)

रजिया (1236 से 1240 ई॰)

बलबन (1266 से 1287 ई॰)

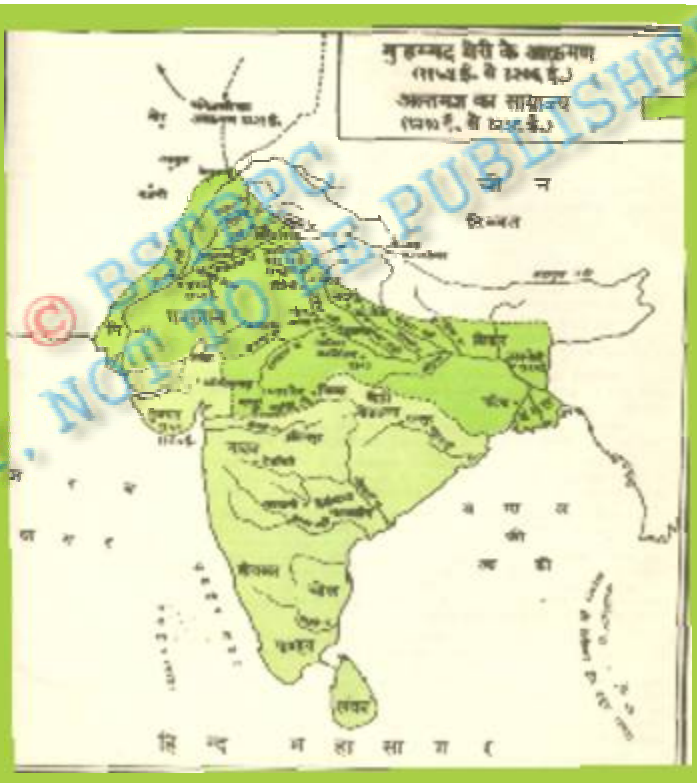

मानचित्र : 2 इल्तुतमिश का राज्य

© BSCERT WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

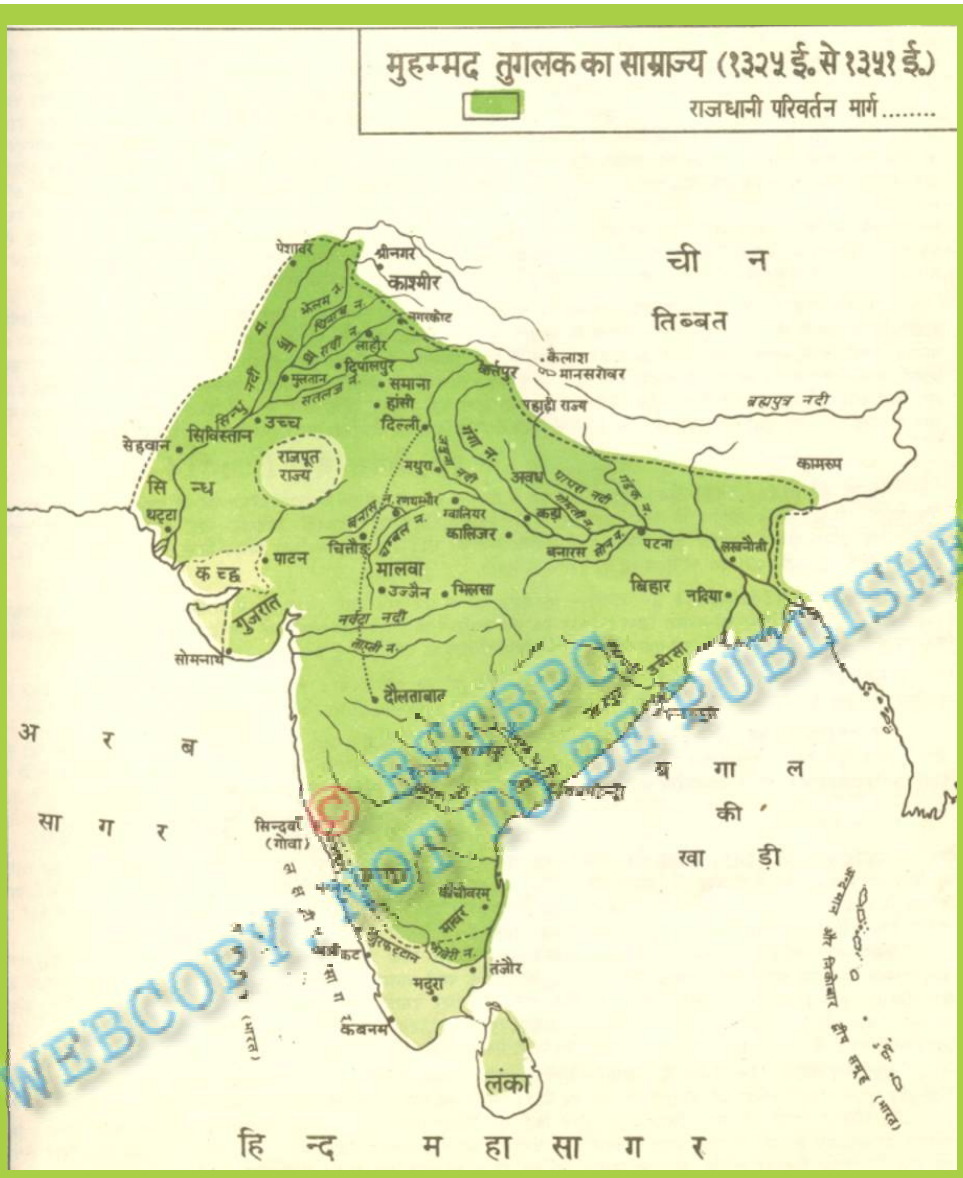

मानचित्र 3 मुहम्मद तुगलक का साम्राज्य

2. **खिलजी वंश** (1290 से 1320 ई.)
जलालुद्दीन खिलजी (1290 से 1296 ई.)
अलाउद्दीन खिलजी (1296 से 1316 ई.)

3. **तुगलक वंश** (1320 से 1414 ई.)
गयासुद्दीन तुगलक (1320 से 1324 ई.)
मुहम्मद बिन तुगलक (1324 से 1351 ई.)
फिरोज शाह तुगलक (1351 से 1388 ई.)

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

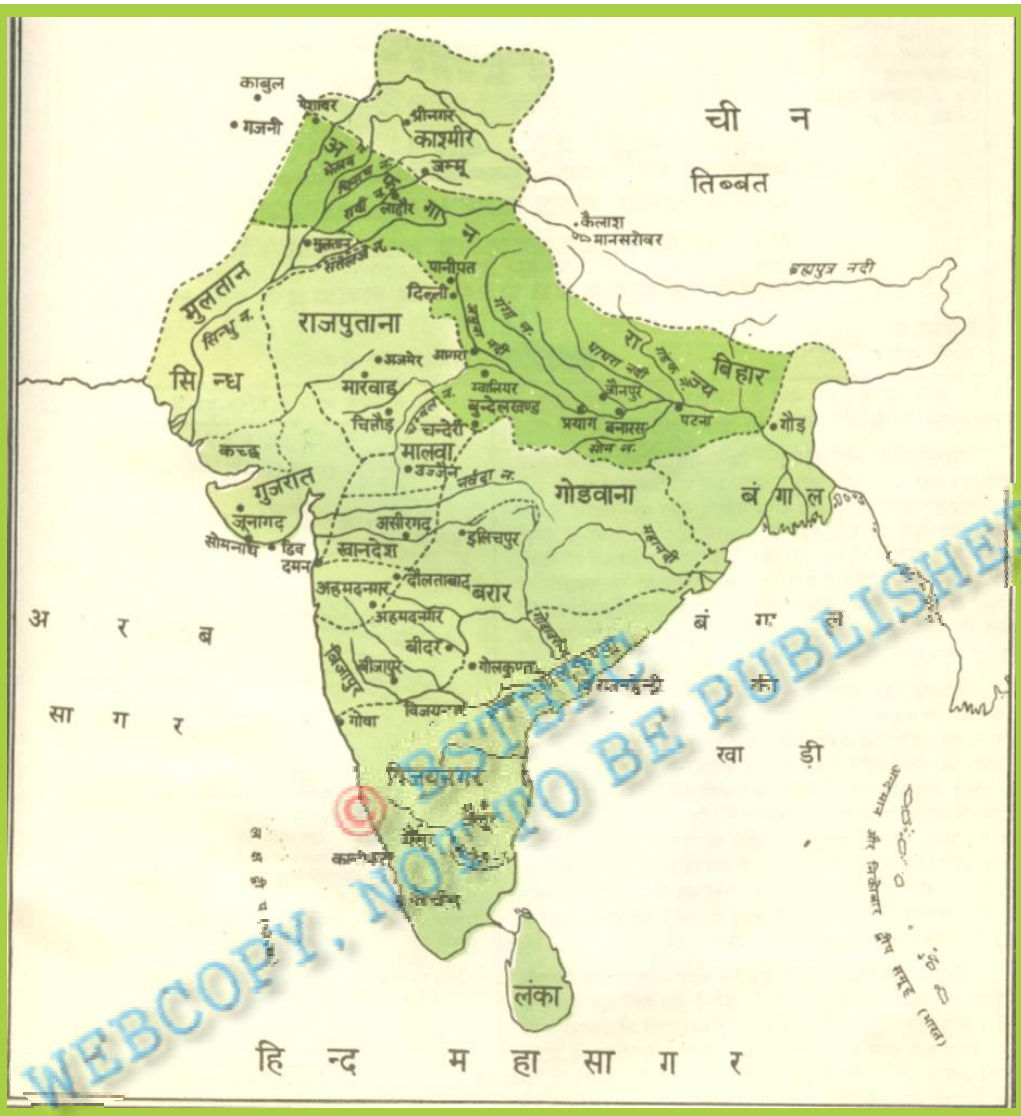

मानचित्र : 4 इब्राहिम लोदी का राज्य

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

4. सैय्यद वंश (**1414** से **1451** ई॰)
खिज्र खाँ (1414 से 1421 ई॰)

5. **लोदी वंश** (1451 से 1526 ई॰)
बहलोल लोदी (1451 से 1489 ई0)
इब्राहिम लोदी (1517 से 1526 ई0)

तुर्क शासन की स्थापना

गंगा जमुना दोआबः गंगा एवं जमुना नदियों के बीच की भूमि

पिछले अध्याय में आप पढ़ चुके हैं कि मुहम्मद गौरी नाम के तुर्क आक्रमणकारी ने पंजाब और मुल्तान से लेकर सम्पूर्ण गंगा–यमुना दोआब के प्रदेशों पर अधिकार जमाने में सफलता पाई। उसने अपने एक गुलाम सेनानायक कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत के प्रदेशों की देखभाल के लिए नियुक्त किया।

1206 ई0 में मुहम्मद गौरी की मृत्यु हो गई। तब उसके प्रमुख गुलाम अधिकारियों ने उसके राज्य को आपस में बाँट लिया। इस तरह से कुतुबुद्दीन ऐबक को सिंध एवं मुल्तान के अतिरिक्त शेष भारतीय प्रांतों का नियंत्रण प्राप्त हुआ। परन्तु तुर्क राज्य को भारत में वास्तविक रूप से स्थापित करने का श्रेय इल्तुतमिश (अल्तमश) को प्राप्त हुआ, इसने मध्य एशिया से संबंध विच्छेद कर उत्तरी भारत में स्वतंत्र राज्य स्थापित किया और सुल्तान की उपाधि खलीफा से प्राप्त की। उसके उत्तराधिकारियों में रजिया सुल्तान, जो उसकी बेटी थी, एकमात्र महिला सुल्तान होने के कारण विशिष्ट महत्व रखती है। किन्तु उसका शासनकाल विफलता में समाप्त हुआ है। तुर्क राज्य को सुदृढ़ स्थिति प्रदान करने का काम बलबन द्वारा किया गया। इन शासकों को ममलूक भी कहा जाता है क्योंकि ये सुल्तानों के गुलाम (ममलूक) के रूप में कार्यरत रहे थे। चूँकि इनकी सत्ता का केन्द्र दिल्ली था अतः उनके राज्य को 'दिल्ली सल्तनत' कहा जाता है।

तुर्क राज्य का विस्तार

मानचित्र 2 पर नजर डालें और पहचान करें कि प्रारंभिक तुर्क शासकों के राज्य की सीमा कहाँ तक फैली हुई थी ? 1290 ई0 में एक खिलजी सेनानायक ने ममलूक वंश के अंतिम सुल्तान कैकुबाद को दिल्ली की गद्दी से हटाकर एक नये राजवंश खिलजी वंश की स्थापना की। इस वंश के सबसे प्रसिद्ध सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने तुर्क राज्य की सीमा को बढ़ाने के लिए सैनिक अभियान चलाये। उसने गुजरात, मालवा, रणथंभौर तथा चित्तौड़ की लड़ाई में सफलता पाई। अपने गुलाम मलिक काफूर के नेतृत्व में एक विशाल सेना दक्षिण भारत भी भेजी। उसने देवगिरि, वारंगल, द्वारसमुद्र, मदुरई पर विजय हासिल की (मानचित्र 5 देखें)। चूँकि दक्षिण भारत के ये राज्य दिल्ली से बहुत दूर थे इसलिए अलाउद्दीन खिलजी ने पराजित राजाओं को वार्षिक कर देने के बदले उन्हें शासन करने की अनुमति दे दी। अलाउद्दीन खिलजी के विपरीत मुहम्मद बिन तुगलक ने दक्षिण के राज्यों को युद्ध में पराजित कर सीधे अपने नियंत्रण में लिया। मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में तुर्क राज्य की सीमा अपनी चरम पर पहुँच चुकी थी (मानचित्र 3 देखें)। इसी के साथ इतने बड़े साम्राज्य की उसने रक्षा की और पश्चिमोत्तर सीमांत पर मंगोल आक्रमणकारियों को निर्णायक ढंग से हराया परन्तु

मानचित्र : 5 अलाउद्दीन खिलजी का सैनिक अभियान

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

उनका नियंत्रण किस सीमा तक प्रभावी था ?आइए आगे देखते हैं। तालिका 1 को देखें। आप पायेंगे कि तुगलक वंश के बाद 1526 ई0 तक दिल्ली और आगरा पर सैयद वंश एवं लोदी वंश के शासकों ने राज्य किया।

(1) मानचित्र 2,3,4 को देखकर बतायें कि तुर्क राज्य का विस्तार किस सुल्तान के समय में सबसे अधिक हुआ और इसका विस्तार कहाँ तक था ?

(2) मानचित्र–5 को देखकर अलाउद्दीन खिलजी के राज्य विस्तार को कालक्रम के अनुसार क्षेत्रों की सूची बनाएँ ?

दिल्ली के सुल्तान शासन कैसे चलाते थे ?

दिल्ली सल्तनत का विस्तार भारतीय उपमहाद्वीप के एक बड़े क्षेत्र में हो गया था। इस पर नियंत्रण रखने के लिए दिल्ली के सुल्तानों को सूबेदार, सेनापति एवं प्रशासकों की जरूरत पड़ी थी। इन सभी अधिकारियों को फारसी भाषा में 'अमीर' कहा जाता था, जो सल्तनत काल में मुख्य शासक वर्ग के रूप में स्थापित थे। दिल्ली के प्रारंभिक तुर्क सुल्तानों ने अपने विश्वसनीय एवं योग्य गुलामों को ऊँचे प्रशासकीय पदों एवं सेनापति के रूप में नियुक्त किया था। इन गुलामों को खरीदकर बड़ी सावधानी से सैनिक एवं प्रशासकीय कार्यों के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। ये गुलाम अपने मालिक (सुल्तान) के प्रति पूर्ण रूप से निष्ठावान एवं वफादार थे।

खिलजी एवं तुगलक शासक भी गुलामों का उपयोग करते रहे। लेकिन उन्होंने निम्न वर्ग के लोगों को भी ऊँचे राजनीतिक पद प्रदान किए इनमें भारतीय मुसलमान, हिन्दू, जैन, अफगान, अरब आदि शामिल थे इससे राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न होने लगी। इतिहासकार बरनी शोक प्रकट करते हुये लिखता है कि मुहम्मद बिन तुगलक ने निम्न कुल में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को ऊँचे पद पदान कर दिये हैं। परन्तु हमें यह याद रखना चाहिए कि ऐसे सभी लोग सक्षम और योग्य व्यक्ति थे और इनकी नियुक्ति एक संगत थी, यह बरनी की व्यक्तिगत पूर्वाग्रह है जिसके कारण वह सुल्तान की आलोचना करता है। मध्ययुगीन समाज में इस प्रकार के पूर्वाग्रह का होना आश्चर्यजनक भी नहीं है क्योंकि लोगों की सोच अत्यंत संकुचित थी।

1. बरनी ने सुल्तान की आलोचना क्यों की थी ?
2. अमीर के रूप में किस वर्ग के लोग शामिल थे ?
3. अमीरों की नियुक्ति किन पदों पर की जाती थी ?

अमीर वर्ग के लोग अपने सुल्तान के प्रति वफादार तो रहते थे, लेकिन उनके उत्तराधिकारियों के प्रति नहीं। सामान्यतः शासक बदलने के साथ उसके अमीर या अधिकारी और सेनानायक भी बदल जाते थे। फलस्वरूप नये और पुराने अमीरों के बीच प्रतिस्पर्धा शुरू हो जाती थी कुछ अमीर तो इतने शक्तिशाली होते थे कि वे सुल्तान तक बन जाते थे। इस प्रकार सुल्तान का पद अमीरों की महत्वाकांक्षा के सामने सुरक्षित नहीं था। अमीर यह विश्वास रखते थे कि उनको भी शासन करने का समान अधिकार था।

केन्द्रीय प्रशासन

अब हम दिल्ली के सुल्तानों के शासन करने के तरीकों के बारे में पढ़ेंगे। हम यह जान–चुके हैं कि अमीरों की नियुक्ति प्रशासनिक पदों पर की जाती थी। सुल्तान अमीरों के सहयोग से शासन चलाने का काम करते थे।

केन्द्रीय प्रशासन में वित्त–विभाग (विजारत) में 'वजीर' का स्थान महत्वपूर्ण था। उसके कार्य थे– राजस्व (कर) वसूल करना, आय–व्यय पर नियंत्रण रखना, वेतन बाँटना, अक्ता देने की व्यवस्था करना। अन्य पदाधिकारियों में आरिजे मुमालिक (सुल्तान की सेना का प्रबंधक) वकील–ए–दर (राजपरिवार की देखरेख करना), काजी (मुख्य न्यायाधीश), दीवान–ए–इंशा (राजकीय फरमान जारी करने वाला), बरीद–ए–मुमालिक (गुप्त रूप से सूचना एकत्र करने वाला) शामिल थे।

अक्ता व्यवस्था

दिल्ली के तुर्क शासकों ने अपने अमीरों को भिन्न–भिन्न आकार के इलाकों में नियुक्त किया था। ये इलाके 'अक्ता' कहलाते थे और इसके अधिकारी 'मुक्ती' या 'वली' कहे जाते थे। इनका दायित्व अपने अक्ता में कानून एवं व्यवस्था बनाये रखना, आवश्यकता पड़ने पर सुल्तान को सैनिक मदद देना तथा भूमि कर की वसूली करना था। ये अधिकारी अपनी सेवा के बदले में वेतन के रूप में राजस्व वसूली का एक निर्धारित भाग अपने पास रख लेते थे जिससे वे अपने सैनिकों को वेतन दिया करते थे। बचे हुये अतिरिक्त राजस्व को सरकारी खजाने में भेज देते थे। मुक्ती लोगों पर नियंत्रण रखने के लिए उन्हें काई भी अक्ता थोड़े थोड़े समय के लिए दिया जाता था, ताकि उनका पद अनुवांशिक न बन जाए। कुछ अंतराल के बाद उनका स्थानांतरण एक अक्ता से दूसरे अक्ता में किया जाता था। मुक्ती द्वारा वसूल किये गये राजस्व का बड़ी सावधानी से हिसाब रखने के लिए आमिल नामक लेखा अधिकारी अक्ताओं में रखे जाते थे। उन्हें सख्ती से हिदायत दी जाती थी कि वे राज्य द्वारा निर्धारित कर ही वसूलें। यह अक्ता व्यवस्था प्रांतीय प्रशासन की इकाई के रूप में कार्य करता था।

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

मुक्ती के अधिकार

निजाम–उल–मुल्क की रचना सियासतनामा के अनुसार–

"उन्हें (मुक्ती) यह समझना चाहिए कि प्रजा (किसानों) पर उनका अधिकार केवल शांतिपूर्ण तरीके से उचित धन (भूमि कर) अथवा प्राधिकार (माल–ए–हक) वसूल करने का है....... प्रजा के जीवन, सम्पत्ति और परिवार को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहिए, मुक्ती को उन पर कोई ऐसा अधिकार नहीं है, अगर प्रजा सुल्तान से सीधे कोई आवेदन या प्रार्थना करना चाहती है तो मुक्ती को उन्हें रोकना नहीं चाहिए। जो मुक्ती इन नियमों का उल्लंघन करें उसे बर्खास्त और दंडित करना चाहिए.....मुक्ती और वली उन (प्रजा) पर उसी प्रकार नियंत्रक है जैसे कि शासक अन्य मुक्तियों पर नियंत्रण रखता है.......
तीन या चार वर्ष बाद आमिल और मुक्ती का स्थानांतरण कर देना चाहिए ताकि ये स्थानीय स्तर पर अधिक शक्तिशाली न हो जाए।"

* अक्ताओं में मुक्ती एवं आमिल के क्या अधिकार एवं दायित्व थे?

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

स्थानीय प्रशासन

सम्कालीन स्रोतों में 'शिक' नामक एक प्रशासनिक इकाई का वर्णन मिलता है। 'शिकदार' (राजस्व अधिकारी) एवं फौजदार (सैनिक अधिकारी) शिक से जुड़े पदाधिकारी थे। ये अपने इलाके में शांति व्यवस्था कायम करने का काम करते थे। साथ ही राजस्व की वसूली भी इनके द्वारा की जाती थी।

चौधरी, लगभग एक सौ गाँवों का प्रधान होता था। बाद के समय में यह 'परगना' नामक प्रशासनिक इकाई का केन्द्र बना। गाँव शासन की सबसे छोटी इकाई थी। गाँव के प्रमुख अधिकारी खुत, मुकद्दम एवं पटवारी थे। पटवारी लेखा पदाधिकारी होता था, जो गाँव की भूमि एवं लगान का लेखा जोखा रखता था। गाँवों में ग्राम पंचायतें झगड़ों का निपटारा करता था।

मंगोलों का खतरा

1219 ई० में मंगोलों ने चंगेज खाँ के नेतृत्व में ट्रान्स ऑक्सियाना (उजबेकिस्तान) पर हमला किया। इसके शीघ्र बाद ही दिल्ली के तुर्क राज्य को उनका आक्रमण झेलना पड़ा। अलाउद्दीन खिल्जी एवं मुहम्मद–बिन–तुगलक के शासन काल में दिल्ली पर मंगोलों के आक्रमण बढ़ गये। इससे मजबूर होकर दोनों सुल्तानों को एक विशाल सेना खड़ी करनी पड़ी। इतनी बड़ी सेना को संभालना प्रशासन के लिए कड़ी चुनौती थी। इस चुनौती का सामना दिल्ली के सुल्तानों ने कैसे किया, आइये देखते हैं।

सैनिक प्रशासन

सल्तनत कालीन सैनिक

सैनिक विभाग (दीवान ए अर्ज) का प्रमुख अधिकारी 'आरिज ए मुमालिक' था। वह सैनिकों की भर्ती, निरीक्षण एवं वेतन देने का कार्य करता था। दिल्ली के तुर्क सुल्तानों ने विशाल सेना का निर्माण किया था और उसकी देख रेख पर विशेष ध्यान देते थे। अलाउद्दीन खिल्जी ने सेना की भर्ती एवं देखभाल के लिए कुछ नियम बनाये थे। उसने सैनिकों का हुलिया (पहचान चिह्नों) रखने पर जोर दिया। उसने यह भी आदेश दिया था कि घोड़ों पर दाग लगाया जाए ताकि निरीक्षण के समय कोई भी सेनानायक गलत तरीके अपनाकर बार बार एक ही घोड़ा न दिखा सके या बिना दाग के घोड़े न रखे। प्रारंभिक तुर्क सुल्तानों के समय में घुड़सवार सैनिकों के नकद वेतन के बदले दिल्ली के निकट के गाँवों में भूमिकर वसूलने का अधिकार दिया गया था। अलाउद्दीन खिल्जी ने अपने सैनिकों को नकद वेतन देने की शुरुआत की। इसके समय में एक घुड़सवार

© BSEBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

सैनिक को 234 टंका प्रति वर्ष वेतन मिलता था। जो सैनिक एक अतिरिक्त घोड़ा रखता था, उन्हें 78 टंका और मिलते थे। दिल्ली के सुल्तानों ने मजबूत सैनिक ताकत पर ही भारत में एक विशाल तुर्क राज्य की स्थापना की थी।

अलाउद्दीन खिल्जी का मूल्य नियंत्रण

दिल्ली पर बार–बार होनेवाले मंगोल आक्रमण का सामना करने के लिए अलाउद्दीन खिल्जी ने एक बड़ी सेना खड़ी की और उसे नकद वेतन दिया। समकालीन इतिहासकार लिखता है कि–

"यदि इतनी बड़ी सेना को साधारण वेतन भी दिया जाता तो राज्य का खजाना पाँच या छः वर्ष में ही समाप्त हो जाता। अतः अलाउद्दीन ने सेना के खर्च में कमी करने के लिए सैनिकों के वेतन में कमी की परन्तु उसके सैनिक सुविधापूर्वक रह सकें, इसके लिए उसने वस्तुओं के मूल्य निश्चित किये और उनकी दरें कम कर दीं।"

एक अन्य समकालीन लेखक के अनुसार वस्तुओं के मूल्य निर्धारित करने में अलाउद्दीन का उद्देश्य अपनी प्रजा को सभी वस्तुएँ उचित मूल्य पर उपलब्ध कराना था। अलाउद्दीन ने अपने एक अमीर से एक बार कहा था–

"यदि मैं जनता को धन भी दूँ तो वह प्रसन्न नहीं होगी। इसलिए मैंने खाद्य सामग्री को सस्ता करने का निश्चय किया है और इसका लाभ प्रत्येक तक पहुँचेगा। इस प्रकार अनाज सस्ता कर दिया जाएगा। मैं नगर में अनाज लाने वाले नैगामों (घुमक्कड़ व्यापारियों) को बुला भेजूँगा। अनाज क्रय करने और नगर में लाने हेतु उन्हें कोषागार से धन दूँगा। मैं व्यापारियों को उनके परिवार के भरण–पोषण के लिए वस्त्र और अन्न दूँगा।

सुल्तान ने खाद्यान्नों से लेकर वस्त्रों, दासों, मवेशियों एवं दैनिक जीवन के उपयोग की अन्य वस्तुओं की कीमतों को निर्धारित कर दिया। प्रत्येक वस्तु के लिए अलग–अलग बाजार निश्चित किये गये। अनाज के लिए मंडी, कपड़े के लिए सराय–ए–अदल, घोड़ों, गुलामों और पशुओं के लिए पृथक बाजार निश्चित किया गया।

समकालीन साधनों के आधार पर ज्ञात होता है कि अलाउद्दीन ने विभिन्न वस्तुओं की निम्न कीमतें निश्चित की थी–

क्रम.सं0	वस्तु	मूल्य	क्रम.सं0	वस्तु	मूल्य
1.	गेहूँ	7.5 जितल प्रतिमन	11.	कपड़ा (महीन)	1 टंका 20 गज
2.	जौ	4 जितल प्रतिमन	12.	घोड़ा (प्रथम श्रेणी)	100 से 120 टंका
3.	चना	5 जितल प्रतिमन	13.	घोड़ा (द्वितीय श्रेणी)	80 से 90 टंका
4.	चावल	5 जितल प्रतिमन	14.	घोड़ा (तृतीय श्रेणी)	65 से 70 टंका
5.	घी	आधा जितल 1 सेर	15.	टट्टू	10 से 25 टंका
6.	नमक	1 जितल 5 सेर	16.	घरेलू दासी	5 से 12 टंका
7.	मिसरी	2 जितल 1 सेर	17.	कुशल दास	20 से 30 टंका
8	शक्कर	1 जितल 1 सेर	18	मजदूर दास	10 से 15 टंका
9.	गुड़	आधा जितल 1 सेर	19.	दूधारू गाय	3 से 4 टंका
10.	कपड़ा (मोटा)	1 टंका 40 गज	20.	भैंस	10 से 12 टंका

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

48 जितल का एक टंका (आज के चांदी के एक रुपये के बराबर) होता था। अलाउद्दीन खिलजी के समय का एक मन आज के लगभग 15 किलोग्राम के बराबर था।

बाजार में अनाज की आपूर्ति करने के लिए किसानों को अपनी उपज का आधा भाग भूमि कर के रूप में देने के आदेश दिये। किसानों को अपनी आवश्यकता से अधिक अनाजों को सरकारी दर पर व्यापारियों के हाथों बेचने को मजबूर किया गया। अनाज को गाँवों से बाजार तक लाने की जिम्मेवारी बंजारों को दी गयी। लगान के रूप में प्राप्त अनाज को दिल्ली स्थित सरकारी गोदामों में जमा किया जाता था ताकि अकाल के समय बाजार में अनाज की पूर्ति की जा सके। कपड़े के व्यापारियों को बाहर से कपड़ा लाने के लिए अग्रिम धन देने की व्यवस्था की गई। सभी व्यापारियों को एक निश्चित मात्रा में वस्तुएँ लाने एवं बेचने के लिए बाध्य किया जाता था। व्यापारियों को व्यापार में जो हानि होती थी, उसकी भरपाई सरकारी खजाने से की जाती थी।

अपने उपायों को सफल बनाने के लिए सुल्तान ने बाजार नियंत्रक (शहना),

बरीद (खुफिया अधिकारी), गुनाहेयान (गुप्तचर) की नियुक्ति की सुल्तान इन अधिकारियों के माध्यम से बाजार की गतिविधियों से अवगत होते रहता था। जमाखोरी, चोरबाजारी, कम तौलने पर कठोर दंड की व्यवस्था की गई थी। गुप्तचर बाजार में घूम-घूमकर वस्तुओं के क्रय-विक्रय की सूचनाएँ एकत्रित कर सुल्तान को भेजा करते थे।

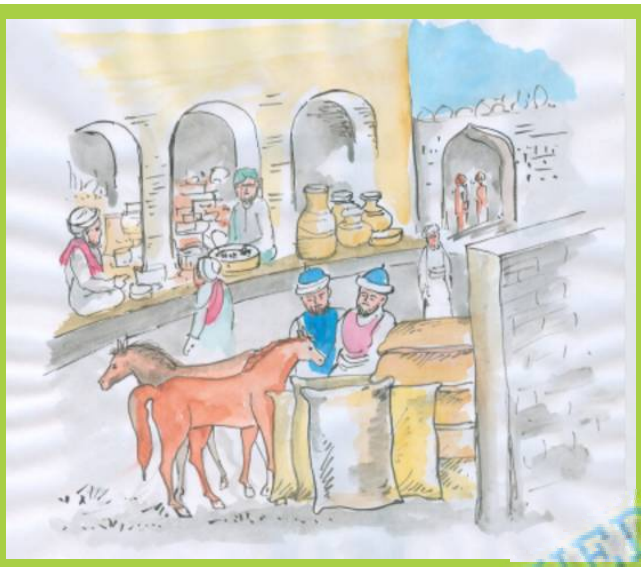

चित्र : 7 अलाउद्दीन खिल्जी के समय का एक बाजार

क्या अलाउद्दीन का यह मूल्य नियंत्रण की व्यवस्था केवल दिल्ली में लागू की गई थी अथवा साम्राज्य के अन्य भागों या शहरों में भी लागू था। इतिहासकार फरिश्ता ने मात्र इतना लेख है कि वस्तुओं के जो मूल्य दिल्ली में थे, वही राज्य के अन्य भागों में भी थे। परन्तु बरनी ने केवल दिल्ली और उसके आस-पास के बाजारों की चर्चा की है उसने लिखा है कि सुल्तान की नीति और नियमों से अनेक वस्तुएँ दिल्ली में सस्ती हो गई थीं और वर्षों तक सस्ती रहीं वस्तुओं की सस्ती होने और बड़ी मात्रा में उपलब्ध होने के कारण अनेक विद्वान, योग्य और कुशल व्यक्ति दिल्ली में आकर बस गये।

आप विचार करें कि अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य नियंत्रण की व्यवस्था से जनसाधारण को क्या लाभ हुआ?

भूमि लगान प्राप्त करने के तरीके

सोलहवीं शताब्दी में जब तुर्कों ने भारत में अपना शासन कायम किया तब उन्होंने भूमि लगान वसूलने की पुरानी व्यवस्था को ही प्रचलित रखा। अंतर केवल इतना ही था कि

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

भूमि की आय पर अधिकार करने वाले लोग बदल गये। पुराने शासक वर्ग (राव, राणा, रावत) के स्थान पर अब तुर्क शासक वर्ग भूमि की आय प्राप्त करने लगा। इतिहासकार बरनी हमें बताता हैं कि खुत, मुकद्दम, चौधरी (धनी किसान का वर्ग) राज्य की ओर से किसानों से भूमिकर (खराज) वसूल करते थे। 'खराज' भूमि पर उपजने वाली पैदावार का हिस्सा होता था। ये लोग किसानों से लगान वसूली करके सरकारी कोष में जमा करते थे। इस सेवा के बदले में उन्हें कर का एक हिस्सा मिलता था। सरकारी कर्मचारियों का यह वर्ग स्वयं धनी किसान होते थे। मगर अपनी भूमि पर लगने वाले कर का बोझ वे गरीब किसानों पर डाल देते थे। भूमिकर के अलावा हरेक किसान को गृह कर और पशु कर भी देना पड़ता था।

चित्र : 8 लगान वसूल करते हुए अधिकारी

©RSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अलाउद्दीन खिलजी ने भूमिकर वसूल करने का अधिकार इनसे छीन लिया और राज्य द्वारा किसानों से कर वसूलने का काम सीधे अधिकारियों को दे दिया। उसने दोआब क्षेत्र और खालसा भूमि (सुल्तान के अधीन भूमि) की माप करवाकर उपज का आधा भाग किसानों को भूमिकर के रूप में देने का आदेश दिया। लगान की दर एक समान रखी गई, चाहे वे धनी किसान हो या सामान्य किसान (बलाहर)। इस प्रकार सुल्तान ने धनी किसानों को नुकसान करके अपनी आय तो बढ़ा ली, परन्तु गरीब किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ। उनकी स्थिति दयनीय बनी रही क्योंकि उनपर करों का बोझ बढ़ गया था। मुहम्मद तुगलक ने भूमि लगान की दर उपज के आधा भाग से भी अधिक बढ़ा दिया, साथ ही कुछ नए कर भी लगाए। दूसरे करों चराई एवं

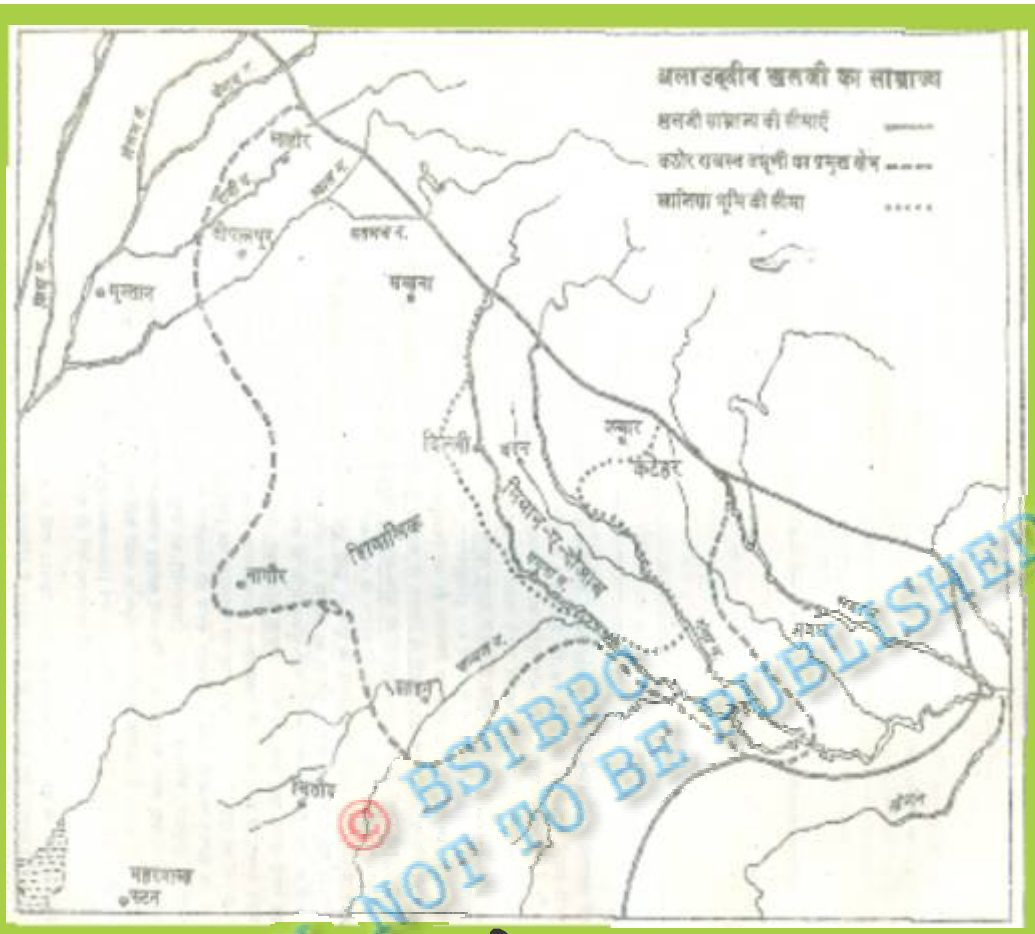

मानचित्र : १

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गृह करों **को सख्ती से** वसूला जाने लगा। इन प्रयासों से किसानों को तबाही का सामना करना पड़ा और वे विद्रोही हो गये।

किसानों का उत्पीड़न

बरनी की रचना तारीख–ए–फीरोजशाही के अनुसार

" सुल्तान... ने सख्ती के साथ राजस्व की माँग की और अनेक प्रकार के अतिरिक्त करों (अबवाब) की बहुतायत से दोआब बर्बाद हो गया। हिन्दुओं ने अनाज के ढेरों में आग लगा कर जला दिया और अपने घरों से जानवरों को भगा दिया। सुल्तान ने शिकदारों और फौजदारों को

आदेश दिया कि पूरे क्षेत्र को उजाड़ दे और लूटमार करें। उन्होंने बहुत से खुत और मुकद्दमों को मार डाला और बहुतों को अंधा कर दिया। जो बच निकले उन्होंने अपने गिरोह बना लिए और जंगलों की ओर भाग गए। पूरा क्षेत्र बर्बाद हो गया। उन्हीं दिनों सुल्तान शिकार खेलने बरन (आधुनिक बुलंदशहर) गया। उसने आदेश दिया कि बरन के सम्पूर्ण क्षेत्र को लूट कर उजाड़ दिया जाए। सुल्तान ने कन्नौज से लेकर बलमऊ तक के सम्पूर्ण क्षेत्र में स्वयं लूटमार की और उजाड़ दिया। जो भी पकड़ा गया, मार डाला गया। अधिकांश (किसान) भाग गए और जंगलों में शरण ली। उन्होंने (सुल्तान की सेना ने) जंगलों को घेर लिया और जंगल में जो भी मिला उसे मार डाला।"

*** क्या आपको किसानों के उत्पीड़न की ऐसी घटनाएँ सुनने और देखने को मिला है? कक्षा में चर्चा करें ?**

(1) मानचित्र–9 को देखकर बतायें कि खालसा भूमि का विस्तार कहाँ से कहाँ तक था ?

(2) आज के किसानों को कौन–कौन–से कर देने पड़ते हैं ?

मुहम्मद बिन तुलक : एक प्रयोगधर्मी शासक

मुहम्मद तुगलक **राजकार्य में नये** नये प्रयोग करने वाला सुल्तान था। उस समय के इतिहासकारों ने सुल्तान की कई योजनाओं का विशेष रूप से विवरण दिया।

राजधानी परिवर्तन:– सुल्तान ने संभवत: 1327 ई0 में देवगिरि को राजधानी बनाने का **निर्णय** लिया और उसका नाम बदलकर दौलताबाद रखा। उसने दिल्ली के सभी निवासियों के दौलताबाद जाकर रहने का आदेश दिया। सुल्तान ने राजधानी परिवर्तन क्यों किया ? आपने इसके विषय में इकाई 1 के 'इतिहासकार की भूमिका' शीर्षक में इतिहासकार बरनी एवं इसामी के विवरणों को पढ़ा है। आप उस के उस भाग को पुन: पढ़ें। इकाई 3 के मानचित्र 3 पर नजर डालिए, इसमें राजधानी परिवर्तन के मार्ग की पहचान करें और बताऐं कि–

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC

1. दिल्ली से दौलताबाद जाने में लोगों को किन–किन क्षेत्रों से होकर गुजरना पड़ा था ?
2. आपके विचार में सुल्तान के राजधानी परिवर्तन का निर्णय उचित था ?
3. आपके अनुसार राजधानी परिवर्तन का कौन–सा कारण उपयुक्त होगा ?
4. राजघानी परिवर्तन के दौरान नागरिकों को किस प्रकार के कष्ट हुये होगें?

खुरासान विजयः– मुहम्मद तुगलक खुरासान (ईरान) के जीतने की योजना बनाई। खुरासान में इलखान मंगोलों का शासन था और अबू सैयद वहाँ का सुल्तान था। सुल्तान मुहम्मद तुगलक इस देश पर विजय पाने के लिए 3,70,000 सैनिकों की एक विशाल सेना खड़ी की। उसने ट्रांसआविसयाना (आधुनिक उजबेगिस्तान) के चगताई मंगोल शासक तरमशरीन और मिस्र के सुल्तान से दोस्ती की।

परन्तु सुल्तान की खुरासान पर विजय पाने की इच्छा सफल नहीं हो सकी क्योंकि मिस्र के सुल्तान और खुरासान के सुल्तान दोनों दोस्त बन गये। दूसरी ओर तरमशरीन को उसके भाई ने गद्दी से हटा दिया। अब सुल्तान के पास इतनी बड़ी सेना को तनख्वाह देने के लिए खजाने में पैसे नहीं थे। अतः सैनिकों को उनके पद से हटा दिया। अचानक हटाये गये बेरोजगार सैनिकों ने डकैती एवं लूटमार करना आरंभ कर दिया तथा वे जनता एवं सरकार दोनों के लिए सिरदर्द बन गये।

सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन– मुहम्मद तुगलक ने अपने सैनिकों को नकद वेतन देने के लिए आज की कागजी मुद्रा की तरह सांकेतिक सिक्के चलाए। ये सिक्के धातु के बने होते थे। लेकिन ये सिक्के उस समय के प्रचलित सोने चांदी के न होकर तांबे जैसी सस्ती धातु से बनाए गये थे। लोगों को इस मुद्रा पर भरोसा नहीं था, क्योंकि सिक्कों की नकल करना आसान था। लोग नकली सिक्के बनाकर तमाम तरह के करों का भुगतान करने लगे और सोने चांदी के सिक्के को बचाकर अपने घरों में जमा करने

©RSTBPS WEBCOPY NOT TO BE REPUBLISHED

लगे। किन्तु जब व्यापारियों ने सांकेतिक सिक्के को लेने से इंकार कर दिया, तब सुल्तान के सांकेतिक मुद्रा बंद करनी पड़ी।

आज की सांकेतिक मुद्रा के बारे में शिक्षक से जानकारी प्राप्त करें।

कृषि सुधार: मुहम्मद तुगलक ने कृषि के विस्तार एवं सुधार के लिए योजना बनाई। दीवान–ए–अमीरकोही (कृषि विभाग) नामक नया विभाग बनाया, जिसके जिम्मे में 60 वर्ग मील का क्षेत्र सौंपा गया। उसने उस क्षेत्र में कृषि का विस्तार करने की ऐसी योजना बनाई कि–थोड़ी सी जमीन भी खाली न पड़ी रहे। सुल्तान का इरादा बंजर भूमि को खेती के दायरा लाने का था। किसानों को बीज, हल, बैल खरीदने एवं कुआँ खुदवाने के लिए 70 लाख टंका की बड़ी रकम कृषि ऋण के लिए मंजूर किया।

परंतु तीन साल तक बंजर भूमि का हजारवाँ भाग भी खेती के लायक नहीं बनाया जा सका। सुल्तान ने जिन अधिकारियों को नियुक्त किया था, वे इस काम को करने के योग्य नहीं थे। अधिकारियों के भ्रष्टाचार के कारण सुल्तान के द्वारा मंजूर किये गये कृषि ऋण का शायद ही कोई अंश किसानों को मिल पाया था। अतः किसान भी इस योजना के प्रति उदासीन रहे।

***"कृषि सुधार एक सरकारी दायित्व है।" यह बात मुहम्मद तुगलक के समय में उभर कर सामने आई है। क्या आप बता सकते हैं कि वर्तमान सरकार द्वारा किसानों को कृषि के विकास एवं सुधार के लिए क्या सहायता दी जाती है?**

सल्तनत काल में कृषि उत्पादन

तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी में भूमि और व्यक्ति का अनुपात बहुत अनुकूल था अर्थात् काफी मात्रा में भूमि उपलब्ध थी और उसपर खेती करने वालों की संख्या कम। किसानों द्वारा बड़ी संख्या में फसलें उगायी जाती थीं। ठक्कुर फेरू, जो अलाउद्दीन खिलजी के समय में दिल्ली की टकसाल का प्रमुख था, करीब 25 फसलों के नाम गिनाता है। खाने वाली फसलों में वह गेहूँ, धान, मोटे अनाज (जौ, ज्वार, बाजरा) तथा दलहन (उड़द, मूंग, मसूर) का विवरण देता है। नकदी फसलों में वह गन्ना, कपास तथा तेल प्रदान करने वाली फसलों तिल और अलसी के नाम बताता है। नील

के उत्पादन का संकेत इस बात से मिलता है कि ईरान के इलखान शासकों द्वारा अपने देश में नील की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा था ताकि भारत पर निर्भरता कम हो सके। मुहम्मद बिन तुगलक किसानों को सलाह दिया करता था कि वे अपनी फसलों में सुधार करें और गेहूँ की जगह गन्ना और गन्ने की जगह अंगूर बोये। चीनी यात्री माहुआन से बंगाल में रेशम के कीड़े पालने की जानकारी प्राप्त होती है।

नहरों द्वारा सिंचाई

समकालीन स्रोतों से हमें नहरों द्वारा सिंचाई किये जाने का विवरण मिलता है। फीरोजशाह तुगलक द्वारा कई नहरें खुदवाने का काम किया गया था। उसने यमुना नदी से हिसार पानी ले जाने के लिए नहरें बनवाई। दोआब में काली नदी से एक नहर खुदवाया, जो दिल्ली के पास यमुना नदी से मिलती थी। एक नहर सतलज और घग्घर नदी से निकलवाई। नहरों द्वारा सिंचाई के कारण पूर्वी पंजाब में कृषि का बहुत विस्तार हुआ। भूमि का एक बड़ा भाग, जो लगभग 80 कोस में फैला था, रजवाह और उलुगखानी नामक दो नहरों से सींचा जाता था। इससे नहरों के किनारे 52 कृषि बस्तियाँ बस गई। एक भी गाँव उजाड़ नहीं रह गया और एक गज भूमि भी ऐसी नहीं बची, जहाँ खेती न होती हो।

सल्तनत काल में किसानों का जीवन

सल्तनत काल में आबादी का एक बड़ा भाग किसानों का था, जो गाँवों में रहता था। एक गाँव में लगभग 200 से 300 लोग रहते थे। किसानों द्वारा व्यक्तिगत रूप से खेती का काम किया जाता

चित्र : 10 खेत जोतता हुआ किसान (मिफ्ता–उल–फुजाला 1450 ई०)

© DSERT WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

था। गिन्न–गिन्न आकर की भूमि पर किसानों का स्वामित्व था। एक ओर तो बड़े भूमि के मालिक खुत, मुकद्दम एवं चौधरी थे। जबकि दूसरी ओर भूमि के छोटे–छोटे टुकड़ों का स्वामी 'बलाहर' किसान थे, जो गाँव में 'निम्न कोटि का माना जाता था। किसानों के नीचे भूमिहीन निम्न जातियों का एक समूह रहा होगा, परंतु इनके विषय में कम जानकारी मिलती है।

किसान खेती के औजारों के स्वयं मालिक थे किसानों के पास आमतौर पर एक जोड़ा बैल और हल होता था साधारण किसान फूस की छप्पर वाली मिट्टी की झोपड़ियों में रहते थे, जिन्हें बाँसों पर टिकाया जाता था। इनके घर जाड़े, बरसात एवं गर्मी से बचने की न्यूनतम जरूरतों को पूरा करते थे। वे खाना पकाने एवं खाने के लिए मिट्टी के बर्तनों का इस्तेमाल करते थे खुत एवं मुकद्दम किसान थे। परंतु ऐसे किसान जो ग्रामीण उच्च वर्ग की तहलीज पर खड़े थे जब यह संपन्न हुए तब उन्होंने अपने से ऊँचे लोगों के तौर–तरीकों की नकल आरंभ की, जैसे– घुड़सवारी करना, अच्छे कपड़े पहनना और पान खाना। संपन्न किसानों के घरों की मुख्य इमारत के चारों तरफ खाली जमीन हुआ करती थी। इसमें के साथ एक से अधिक कमरे, आँगन, चबूतरा होता था। दीवार चित्रकारी से सजी होती थी। उनके रहने के स्थान के चारों तरफ सब्जी, फूल और फल का बगीचा हुआ करता था।

*** सल्तनत काल में साधारण किसान एवं धनी किसान में आप क्या अंतर देखते हैं ?**

अभ्यास

फिर से याद करें :

1. दिल्ली की स्थापना किस राजवंश के काल में हुई?
2. अलाउद्दीन खिलजी के शासन में किस गुलाम सेनानायक ने दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त की थी ?
3. मूल्य नियंत्रण की नीति किस सुल्तान ने लागू की थी ?

© NCERT NOT TO BE REPUBLISHED WEBCOPY

4. दिल्ली के किस सुल्तान ने नहरों का निर्माण करवाया था ?

5. मिलान करें–

राजवंश	संस्थापक
(क) प्रारंभिक तुर्क वंश	(i) खिज्र खाँ
(ख) खिल्जी वंश	(ii) गयासुद्दीन
(ग) तुगलक वंश	(iii) बहलोल
(घ) सैयद वंश	(iv) जलालुद्दीन
(ङ) लोदी वंश	(v) कुतुबुद्दीन ऐबक

आइए समझें :

6. दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था के अंतर्गत अक्तादारी व्यवस्था पर प्रकाश डालें।

7. सल्तनत काल में लगान व्यवस्था का वर्णन करें और बताएँ कि किसानों के जीवन पर इसका क्या प्रभाव था ?

8. दिल्ली के सुल्तानों की प्रशासनिक व्यवस्था में कार्यरत अधिकारियों की सूची बनाएँ और उनके कार्यों का उल्लेख करें।

9. सल्तनत काल में उपजाई जाने वाली अनाजों को खरीफ एवं रबी फसलों में बाँटकर बताइये।

आइए विचार करें :

10. अलाउद्दीन खिलजी के मूल्य नियंत्रण पर प्रकाश डालते हुए विचार करें कि क्या वर्तमान समय में सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर वस्तुओं की बिक्री की कोई योजना कार्य कर रही है ?

11. सल्तनत कालीन किसानों एवं आज के किसानों में आप क्या समानता एवं

© CBSTBPO WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

असमानता देखते हैं ?

आइए करके देखें:—

12. मुहम्मद बिन तुगलक की योजनाओं को रेखांकित करते हुये उसकी असफलताओं के कारणों को ढूढ़ें

योजना का नाम	कारण	असफलता का कारण
राजधानी परिवर्तन		
खुरासान विजय		
सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन		
दोआब में कर वृद्धि		
कृषि सुधार		

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

www.absol.in